शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 नवम्बर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

निम्न उपलब्धि स्तर के कारणों का अध्ययन एवं समाधान

डॉ. अरूणा वाजपेयी
प्राचार्य
काम्फीडर प्रशिक्षण संस्थान
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

यह समस्या बी.एड. के क्षेत्र में संदर्भित है। इसका समाधान स्वयं किया जा सकता है। यह गुणवत्ता पूर्ण है। इसके अध्ययन में समय भी कम लगेगा। समाधान के पश्चात बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के उपलब्धि स्तर में भी वृद्धि होगी। बी.एड. प्रथम सेमेस्टर में यह CC3 *(भाषा से परे पाठ्यक्रम शीर्षक से) पाठ्यचर्या में वर्णित है। यह प्रायोगिक विषय है। इसके क्रेडिट कुल 4 हैं तथा कुल अंक 50 हैं, जिसमें से 15 अंक आंतरिक मूल्यांकन एवं 35 अंक बाह्य मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या में निर्दिष्ट हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में निम्न उपलब्धि स्तर के कारणों का अध्ययन एवं समाधान पर विचार किया गया है।*

भूमिका

पाठ्यचर्या में इस विषय के पाठ्यक्रम में कुल तीन इकाईयाँ हैं। पहली इकाई - विवरणात्मक और वर्णनात्मक वृत्तांतों से जुड़ना है। दूसरी इकाई - प्रसिद्ध विषय आधारित व्याख्यात्मक लेखन से जुड़ना तथा तीसरा इकाई - पत्रकारिता लेखन से जुड़ना।

इस विषय के अंतर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ सम्पन्न की गई :

1 पढ़ने के लिये बोधगम्यता एवं मानसिक चित्रण के लिए गतिविधियाँ (व्यक्तिगत एवं सहसमूह वाचन तथा वाद-विवाद व व्याख्या)।

2 पुनः कथन लेखन - किसी व्यक्ति के स्वयं के शब्दों में / विभिन्न दृष्टिकोण से/छोटे समूहों में।

3 किसी व्यक्ति के जीवन-अनुभव से सम्बन्धित वर्णन / व्याख्या (किसी छोटे समूह में)।

4 पात्रों के चरित्र एवं स्थितियों पर चर्चा-अर्थों एवं दृष्टिकोणों को साझा करना। (किसी छोटे समूह में)।

5 मूल पाठ पर आधारित लेखन, उदाहरण के लिये, दृश्य का सारांश, कहानी का स्पष्टीकरण, किसी स्थिति को संवाद में बदलना इत्यादि (व्यक्तिगत कार्य)।

6 समग्र अर्थ, जानकारी, विषय ज्ञान का सार निकालने के लिये पठन (युग्मों में सरल नोट्स बनाने हेतु मार्गदर्शन)।

7 विषय संदर्भित प्रमुख संकल्पनाओं और विचारों को पहचानना तथा प्रणाली बहु रूप में नोट्स बनाना एवं छायाचित्र, वृक्ष चित्र मस्तिष्क नक्शा बनाना एवं मार्गदर्शन द्वारा युग्मों में कार्य करना।

8 पाठ / विषय /प्रकाश के सार की स्वयं के शब्दों में दूसरों को समझाने के लिये कहना।

9 लेखन शैली, विषय विशिष्ट शब्दकोश और परिप्रेक्ष्य या संदर्भ रचना में भाग लेना जिसमें विभिन्न विषयों को प्रस्तुत किया जाता है। व्याख्या कौशल का प्रयोग करना।

10 टिप्पणियों और मतों के साथ पाठ की समीक्षा या सारांश लिखना। (व्यक्तिगत कार्य)

11 चयनित पाठ्यविषय में समाचार पत्र का सार्थक महत्व के प्रसंगों पर पत्रिकाओं के लेख एकत्र करना।2

12 जानकारी का सार निकालने के लिये पठन नीतियों का उपयोग करना जैसे स्केनिंग, स्किमिंग और टीडिंग - लेखों के प्रारम्भिक पठन के निर्देशित व्यक्तिगत कार्य करना।

13 लेखों की संरचना का विश्लेषण, उप शीर्षकों को पहचानना, मुख्य शब्द, विचारों को क्रम देना, ठोस विवरण, चित्रांकन या सांख्यिकीय प्रस्तुतीकरण का उपयोग इत्यादि करना।

14 लेख की फ्रेमिंग हेतु प्रस्तुत किए गए दृष्टिकोण, संभावित अभिमतों व झुकावों में भाग लेने के लिये पठन।

15 स्थानीय रूचि के विषयों पर शोध करना और लेखों को लिखना (किसी स्थानीय रूचि पत्रिका का निर्माण करने के लिये कार्य करना।)

इस पत्र में इस सेमेस्टर में उपर्युक्त गतिविधियाँ सम्पन्न की जाती हैं।

बी.एड. प्रथम सेमेस्टर के प्रशिक्षणार्थी CC3 के प्रायोगिक विषय में प्राप्त उपलब्धि के निम्न स्तर के कारणों को जानने हेतु निम्नलिखित समस्या चुनने के कारण अनुभव किए गए :

1 अस्पष्ट, विस्तृत एवं अव्यावहारिक पाठ्यक्रम।

2 प्रशिक्षणार्थियों की कम उपस्थिति व अनुभवों में कमी।

3 बी.एड. के नवीन पाठ्यक्रम में इस विषय का अनिवार्य व महत्वपूर्ण स्थान।

4 सभी प्रशिक्षणार्थियों की भाषागत कौशलों में निपुण न होना।

5 प्रशिक्षणार्थियों की भाषा को महत्वपूर्ण न मानकर विषय में रूचि न लेना।

6 भाषा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण न होना।

शोध प्रश्न / उद्देश्य

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित शोध प्रश्न/उद्देश्यों का निर्धारण किया गया

1 बी.एड. प्रथम सेमेस्टर के CC3 विषय के पाठ्यक्रम का अध्ययन करना।

2 बी.एड. प्रथम सेमेस्टर के CC3 विषय में प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि के निम्न स्तर के कारणों की जानकारी प्राप्त करना।

3 स्वनिर्मित प्रश्नावली द्वारा बी.एड. प्रथम सेमेस्टर के CC3 विषय के अध्ययन में आने वाली समस्याओं व उनके कारणों को ज्ञात करना।

4 CC4 विषय की उपलब्धि के स्तर में वृद्धि हेतु मार्गदर्शन प्रदान करना।

5 मार्गदर्शन की प्रतिपुष्टि प्रशिक्षिणार्थियों से प्राप्त करना।

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित परिकल्पना विकसित की गई :

1 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की CC3 में उपलब्धि के निम्न स्तर हेतु विभिन्न कारण पाए जायेंगे।

2 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को CC3 विषय के अध्ययन में आने वाली समस्यायें अलग पायी जायेंगी।

3 मार्गदर्शन द्वारा बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि का स्तर समान रूप से वृद्धि को प्राप्त हो सकेगा।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध प्रायोगिक प्रविधि अपनायी गई।

उपकरण

उपलब्धि परीक्षण पत्र, प्रश्नावली, प्रतिपुष्टि पत्र।

कार्य विधि

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा निम्न कार्य विधि सम्पन्न की गई :

1 काम्फीडर प्रशिक्षण संस्थान के बी.एड. के प्रशिक्षणार्थी न्यादर्श के रूप में उपलब्धता के आधार पर तथा उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि द्वारा आदर्श के रूप में चयनित किए गए।

2 स्वनिर्मित CC3 विषय में उपलब्धि परीक्षण पत्र को बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में प्रशासित कर उपलब्धि ज्ञात की गई।

3 निम्न उपलब्धि स्तर प्राप्त बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को शोधार्थी द्वारा मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

4 तत्पश्चात बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का पुनः उपलब्धि परीक्षण द्वारा उपलब्धि ज्ञात की गई।

5 पूर्व व पश्च उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांकों की तुलना का उपलब्धि स्तर ज्ञात किया गया।

6 उपलब्धि के स्तर में वृद्धि पूर्व व पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों की तुलना द्वारा जांची गई। मार्गदर्शन हेतु प्रतिपुष्टि प्राप्त की गई।

7 प्राप्त परिणामों पर चर्चा कर निष्कर्ष प्राप्त किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण

स्वनिर्मित उपलब्धि परीक्षण पत्र (CC3 विषय) द्वारा प्राप्त पूर्व एवं पश्च परीक्षण के उपलब्धि प्राप्तांकों की तुलना की गई।

परीक्षण प्राप्त/ विद्यार्थी	पूर्व परीक्षण	%	पश्च परीक्षण	%	उपलब्धि स्तर में वृद्धि
1	30	60	35	70	10
2	25	50	30	60	10
3	18	36	25	50	14
4	20	40	27	54	14
5	30	60	40	80	20
6	24	48	32	64	16
7	28	56	35	70	14
8	30	60	40	80	20
9	15	30	25	50	20
10	10	20	30	60	40
11	20	40	40	80	40
12	22	44	44	88	44
13	18	36	36	72	36
14	26	52	40	80	28
15	14	28	30	60	32
16	12	24	28	56	32
17	20	40	40	80	40
18	16	32	35	70	38
19	28	56	34	68	14
20	22	44	40	80	40

प्रदत्तों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि CC3 विषय को उचित मार्गदर्शन से पढ़ाने पर बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों में उपलब्धि स्तर में कम से कम 10 प्रतिशत से लेकर 44 प्रतिशत तक वृद्धि हुई है।

मार्गदर्शन में प्रशिक्षणार्थियों को अतिलघुस्तरीय प्रश्नों को हल सहित समझाने पर प्रशिक्षणार्थियों का CC3 विषय का समुचित ज्ञान प्राप्त हुआ, जिसकी वजह से उपलब्धि स्तर में वृद्धि पायी गई।

परिणाम

शोध हेतु निर्मित परिकल्पना :

1 प्रश्नावली द्वारा प्राप्त उत्तरों के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के CC3 विषय में उपलब्धि के निम्न स्तर हेतु कारण विभिन्न पाए गए अतएव परिकल्पना पहली अस्वीकृत नहीं होती है।

2 दूसरी परिकल्पना निर्मित की गई थी कि बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को ब्ब्3 विषय के अध्ययन में आने वाली समस्याएं अलग-अलग पायी जायेंगी, अस्वीकृत नहीं की जाती है, क्योंकि समस्याएं अलग-अलग पायी गयीं।

3 शोधार्थी द्वारा प्रदत्त मार्गदर्शन द्वारा बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के CC3 विषय की उपलब्धि में

प्राप्तांकों में वृद्धि हुई है अतएव परिकल्पना क्रमांक तीन भी अस्वीकृत नहीं की जाती है।

निष्कर्ष

प्राप्त परिणामों एवं मार्गदर्शन हेतु प्राप्तु बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की प्रतिपुष्टि द्वारा यह निष्कर्ष प्रदान किया जाता है कि CC3 के अध्ययन में बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी विषयगत उपलब्धि का स्तर घर जाता है, इनके कारण भी प्रशिक्षणार्थियों द्वारा अलग-अलग बनाये जाते हैं। प्रशिक्षणार्थियों को उचित मार्गदर्शन प्रदान किया जाए तो निश्चित तौर पर उनकी उपलब्धि के स्तर में वृद्धि होती है।

शैक्षिक निहितार्थ

उचित मार्गदर्शन से किसी भी विषय के शिक्षण अधिगम को रूचिकर एवं प्रभावी बनाया जा सकता है तथा प्रतिपुष्टि मार्गदर्शन को भी अधोचित बनाया जा सकता है। प्रशिक्षणार्थियों के उपलब्धि स्तर को समस्या व उनके कारणों का अध्ययन कर उन्हें दूर कर उचित मार्गदर्शन देकर वृद्धि प्रदान की जा सकती है।

सुझाव

CC3 विषय से संदर्भित प्रश्न बैंक व स्वअधिगम सामग्री द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 Johnson J. : The Communication Approach to Language Teaching, OUP, Oxford, 1979.
2 Brumfit, C.J. & Johnson, K., The Communicaiton Approach to Language Teaching, OUP, Oxford, 1979.
3 Heaton, J.B. Language Testing, Modern English Publication Ltd., Great Britain, 1982.